

कोविड-19 हेतु आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिए दिशा निर्देश

सामान्य डिसक्लेमर

लक्ष्य समूह-1 कोरोना पॉजिटिव टेस्ट के साथ या उसके बिना क्वारंटाइन और होम आइसोलेशन रोगी और स्वास्थ्य कर्मचारी
5

- . निवारक उपाय
- . समकालीन दिशानिर्देश
- . रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली- एकल औषधियाँ
- . रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले- औषधयोग
- . रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु जीवनशैली निर्देश (दिनचर्या)
- . अन्य सामान्य उपाय

लक्ष्य समूह 2- हल्के, गंभीर लक्षण वाले, सहरुग्णता और इम्यूनो-कोंप्रोमाइज्ड स्थिति वाले रोगी
11

- . हल्के लक्षणों हेतु उपचारात्मक दिशा-निर्देश
- . गंभीर लक्षणों हेतु उपचारात्मक दिशा-निर्देश
- . सहरुग्णता
- . मधुमेह
- . हृदय संबंधी रोग
- . वृक्क रोग
- . उत्तम आहार

लक्ष्य समूह 3-जोखिम वाले समूह (गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ, बच्चे और वृद्धावस्था रोगी)
19

- . भूमिका
- . बच्चों के लिए रसायन
- . गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए रसायन
- . वृद्धावस्था रोगियों के लिए रसायन
- . इम्यूनो-कोंप्रोमाइज्ड स्थिति वाले रोगियों के लिए रसायन

लक्ष्य समूह 4- उपचार के पश्चात स्वास्थ्यप्रद स्वास्थ्य देखभाल
22

- . भूमिका
- . समकालीन दिशा-निर्देश
- . उपचार
- . औषधयोग- औषध मात्रा (पोसोलॉजी) के साथ
- . आहार संबंधी आदतें/ आहार
- . योगाभ्यास

परिशिष्ट

26

- . अनुलग्नक 1- केस रिकॉर्ड फ़ॉर्म (सीआरएफ- कोविड 19)
- . अनुलग्नक 2- उपचार में प्रयुक्त औषधियों की शब्दावली

कोविड-19 के उपचार हेतु प्रोटोकॉल का फ्लो चार्ट

लक्ष्य समूह 1: कोरोना पोजिटिव टेस्ट या उसके बिना वाले कारंटाइन और होम आइसोलेशन रोगी तथा स्वास्थ्य कर्मी

लक्ष्य समूह 2: हल्के, गंभीर लक्षण, सहरुग्णता और इम्यूनो-कोप्रोमाइड स्थिति वाले रोगी

लक्ष्य समूह 3: जोखिम वाले समूह (गर्भवती और स्तनपान करने वाली महिलाएं, बच्चे और वृद्धावस्था वाले रोगी)

लक्ष्य समूहों और इंटरवेंशंस पर आधारित कोविड 19 उपचार

निवारक

लक्ष्य समूह 1

सामान्य जनता और

संदिग्ध और कारंटाइनड

इम्यूनो-कोप्रोमाइड

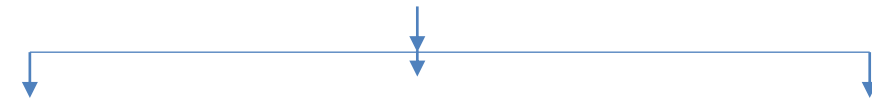
प्रोत्साहक

लक्ष्य समूह -4

ठीक होने के बाद रख-रखाव

(नोबारा होने से जेम्स)

उपचारात्मक



हल्का
(ज्वर/यूआरटीआई)
लक्ष्य समूह 2

सह-रुग्णता स्थितियों के साथ हल्का पारंपरिक उपचार + लक्ष्य समूह 2 को एड

जोखिम वाली जनसंख्या के साथ हल्का लक्ष्य समूह 2 + 3 + पारंपरिक उपचार

मध्यम

(गंभीर रोग के लक्षणों के बिना न्यूमोनिया)
(आरआर 15 से 30/मिनट,

सह-रुग्णता स्थितियों के साथ मध्यम

पारंपरिक उपचार + लक्ष्य समूह 2 को एड ऑन

जोखिम वाली जनसंख्या के साथ मध्यम पारंपरिक उपचार

गंभीर

(आरआर ≥ 30 /मिनट, एसपीओ 2 (90% से

सह-रुग्णता स्थितियों के साथ गंभीर

पारंपरिक उपचार + लक्ष्य

जोखिम वाली जनसंख्या के साथ गंभीर पारंपरिक + लक्ष्य 2+ 3

कलर कोड

स्टैंड एलोन मैनेजमेंट	लक्ष्य समूह 2 के उपचार के साथ पारंपरिक उपचार	पारंपरिक उपचार और लक्ष्य समूह 2 + 3 एड ऑन थेरेपी के रूप में
लक्ष्य समूह 2 के उपचार के साथ स्टैंड एलोन	लक्ष्य समूह 2 + 3 और पारंपरिक उपचार	लक्ष्य समूह 4 के साथ स्टैंड एलोन थेरेपी

प्रस्तावना

कोविड 19, एक संक्रामक रोग है जो एक नए आविष्कृत कोरोना विषाणु संक्रमण के कारण होता है। इसके परिणामस्वरूप, संपूर्ण विश्व की मानवजाति पीड़ित है। अभी तक, इस रोग के निवारण या इस संक्रमण के निवारण के लिए इसकी प्रोग्रेसिस में सुधार करने हेतु किसी औषधि या उपचार ने आशाजनक परिणाम नहीं दर्शाए हैं। कोविड 19 संक्रमण को रोकने के उत्तम उपाय कड़ी को तोड़ना, मानव की शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करना, शीघ्र संक्रमण की पहचान और समय पर चिकित्सीय देखभाल प्रदान करना है। आयुष मंत्रालय मानवजाति के लाभ के लिए इस द्वीप में टाइम-टेसटेड शास्त्रीय ज्ञान के विशाल संसाधन से राष्ट्र की सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध है। मंत्रालय ने मानव के प्राकृतिक रक्षा तंत्र (इम्यूनिटी) के सतह-साथ व्यक्तिगत स्वच्छता और सोशल डिस्टेंसिंग उपायों में सुधार करने के लिए उपायों की एक सीरीज पहले ही प्रकाशित कर दी है।

आयुर्वेद ने जनपदोर्ध्वस (मानव व्यवस्थापन का विध्वंस करने वाली स्थिति) के परिपेक्ष्य के अंतर्गत महामारी/विश्वव्यापी महामारी को प्रलेखित किया है। इसी प्रकार, संक्रामक रोग के अंतर्गत संक्रामक रोगों को रखा गया है। रोग को बड़े पैमाने पर फैलाने के लिए वायु, जल, जलवायु तथा पर्यावरण उत्तरदायी हैं जिसके कारण जनपदोर्ध्वस होता है। शास्त्रीय ग्रंथों में वायु, जल, जलवायु और स्थान में परिवर्तन के कारणों के साथ-साथ उनके गुणधर्म के बारे में बताया गया है। अपशिष्ट का अनुचित निपटान, दूषित जल का वितरण, वायु प्रदूषण, अस्वस्थ और बेकार की गतिविधियों में संलिप्तता, निर्णय लेने में विफलता और स्थिति की गलतफहमी आदि के कारण भी समाज के स्वास्थ्य की यथोचित क्षति होती है; जिससे जनपदोर्ध्वस होता है। ऐसी परिस्थितियाँ खाँसी, साँस लेने में तकलीफ़, ज्वर आदि लक्षणों को प्रकट करेंगी। आयुर्वेद में, इसे प्रकटन के आरंभिक चरण की तुलना आगंतुज वातकफज्वर से की जा सकती है। अनियंत्रित परिस्थितियाँ अन्य दोषों और अन्य रस, रक्त, मांसादि दूष्यों को सन्निपात की स्थिति तक और अधिक बढ़ा देती हैं।

“आयुर्वेद चिकित्सकों के लिए प्रोटोकॉल” का यह दस्तावेज केवल पंजीकृत आयुर्वेद चिकित्सकों के प्रयोग के लिए दिशा-निर्देश है। कोविड 19 संक्रमण उपचार के संपूर्ण स्पेक्ट्रम के चार भाग हैं। यह मसौदा इन तीन चरणों में सिप्रोमेटोलॉजी से संबद्ध है:

1. प्रथम चरण- ज्वर के साथ श्वास-कास लक्षण (कोविड 19 के हल्के लक्षणों के साथ पॉजिटिव या निगेटिव रोगी)
2. द्वितीय चरण- वात-कफ प्रधान ज्वर (फीवर) (कोविड 19 के मध्यम लक्षणों के साथ पॉजिटिव या निगेटिव रोगी)
3. तृतीय चरण- वात-कफज्ज सन्निपातिक ज्वर (फीवर) (साँस लेने में कठिनाई आदि के साथ गंभीर लक्षणों वाले कोविड 19 पॉजिटिव रोगी)

रोगियों का विभाजन – लक्ष्य समूह और उपचार सिद्धांत

क्र. सं.	लक्ष्य समूह	उपचार
1	लक्ष्य समूह 1: बिना कोरोना पॉजिटिव टेस्ट के क्वारंटाइन और होम आइसोलेशन रोगी और स्वस्थ	निवारक उपचार

	कर्मचारी	
2	लक्ष्य समूह 2: हल्के, गंभीर सिंष्टोमेटोलॉजी, सहरुग्णता और इम्यूनो-कोंप्रोमाइज्ड स्थिति वाले रोगी	लक्षणात्मक उपचार
3	लक्ष्य समूह 3- जोखिम वाले समूह (गर्भवती और स्तनपान वाली महिलाएँ, बच्चे और वृद्धावस्था रोगी)	एकीकृत देखभाल (नियमित निगरानी के अंदर वर्तमान औषधियों के साथ आयुर्वेद उपचार)
4	लक्ष्य समूह 4- उपचार के पश्चात स्वास्थ्यप्रद स्वास्थ्य देखभाल	स्वास्थ्य लाभ और कायाकल्प के लिए उपचार

स्वास्थ्य प्राधिकारियों (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, विश्व स्वास्थ्य संगठन और राज्य और स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों) द्वारा जारी किए गए सभी स्थायी निर्देशों का पूरी तरह से पालन किया जाना है और आयुर्वेद उपचार वर्तमान समकालीन पंक्ति में 'ADD ON' के रूप में हो सकता है।

यहां संस्तुत दवाएं आवश्यक औषधि सूची, मानक उपचार दिशानिर्देश, भारत के आयुर्वेदिक फार्माकोपिया, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के साथ-साथ विभिन्न स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा जारी अन्य सिफारिशों पर आधारित हैं। वैद्य के पास रोग के चरण, जटिल लक्षण और उनके इलाके में औषधियों की उपलब्धता के आधार पर औषधियों का चयन करने का विवेक है। मास्क, हैंड सेनिटाइजेशन, कड़ी को तोड़ने के लिए सामाजिक / शारीरिक दूरी, स्वस्थ पौष्टिक आहार और रोगप्रतिरोधक क्षमता में सुधार तथा अन्य सभी सामान्य स्वास्थ्य देखभाल उपायों पर समय-समय पर स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार सलाह दी जाती है।

सामान्य डिसक्लेमर

- चिकित्सक के पास रोग के चरण, जटिल लक्षण और उनके इलाके में औषधियों की उपलब्धता के आधार पर औषधियों का चयन करने का विवेक है।
- कोई भी औषधि लेने से पूर्व रोगी को योग्य चिकित्सक से परामर्श/ सलाह लेने की आवश्यकता है।
- सलाहकार चिकित्सक को औषधि से होने वाली एलर्जी और हर्ब-औषधि परस्पर क्रिया की जानकारी, जहाँ भी अपेक्षित हो, का ध्यान रखना है।
- जोखिम वाली जनसंख्या में औषधियों का प्रयोग परामर्शक चिकित्सक के विवेक पर है।
- चिकित्सक को निर्दिष्ट फॉर्मेट (सीआरएफ) में उपचार किए जा रहे रोगियों के मामलों को रखना है।
- गर्भवस्था के दौरान दिशा-निर्देशों में वर्णित औषधियों का प्रयोग सावधानी से किया जाना है।
- आयु के अनुसार बच्चों को खुराक देनी चाहिए।
- सभी गंभीर मामलों और जीवन को खतरे में डालने वाली परिस्थितियों में, तत्काल चिकित्सा देखभाल प्रदान की जानी चाहिए और, उचित सहमति प्रक्रिया के साथ आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग वर्तमान उपचार में सहायक औषधि के रूप में किया जा सकता है।
- जिन रोगियों की उच्चरक्तचाप, मधुमेह, कैंसर-कीमोथेरेपी आदि जैसी स्वास्थ्य समस्याओं के कारण पहले से ही औषधियां चल रही हैं, उन्हें जारी रखा जाए।

- औषधियों का चयन करते समय, चिकित्सक को मधुमेह हेतु शर्करा वाली औषध, उच्चरक्तचाप हेतु हाई फेट/नमक वाली औषध तथा मधुमेह रोगी को मधुमेह के लिए शर्करा वाली औषध, उच्चरक्तचाप के लिए हाई फेट/नमक वाली औषध आदि देने से बचना चाहिए।

लक्ष्य समूह 1

कोविड 19 पॉजिटिव रोगियों के लिए क्वारंटाइन और होम आइसोलेशन, यह विवेकपूर्ण नहीं होगा कि बिना कोरोना पॉजिटिव टेस्ट के केवल निवारक देखभाल दी जाए और स्वास्थ्य कर्मचारी

जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए दिनचर्या (दैनिक जीवन) और ऋतुचर्या (मौसमी जीवन) के विस्तार के माध्यम से आयुर्वेद में निवारक उपचार की व्यापक जानकारी है। आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथों में अत्यधिक जोर दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखकर अपने लिए जागरूकता की सादगी और समरसता प्राप्त कर सकता है। इसके आगे, आयुर्वेद निवारण पर पहले ज़ोर देता है। इस दिशा में स्वस्थहितद्रव्य (स्वस्थ रहने के लिए रेसिपी) को रसायन और वाजीकरण के रूप में इंगित किया गया है। ओज को व्याधिक्षमत्व (प्रतिरोधक क्षमता) के लिए उत्तरदायी माना जाता है। इसे दो दृष्टिकोणों यथा व्याधिबलविरोधित्व और व्याधि उत्पादक प्रतिबंधकत्व से प्राप्त किया जाता है। इनमें से व्याधिबलविरोधित्व को किसी व्यक्ति के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार कर के प्राप्त किया जाता है, जबकि व्याधि उत्पादक प्रतिबंधकत्व का सृजन रोग के निवारण में निर्दिष्ट रेसिपियों का प्रयोग कर किया जाता है।

स्वयं को इसका शिकार होने से बचाने के लिए इस रोग के फैलने के तरीके के बारे में जागरूकता बहुत ही आवश्यक है। डब्ल्यूएचओ की सलाह के अनुसार, जिन लोगों के पास संक्रमण है, वे दूसरे लोगों को कोविड -19 से संक्रमित कर सकते हैं। जब कोई संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है तो इन छोटी-छोटी बूंदों के माध्यम से यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है।

1.1 निवारक उपाय

1. राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राधिकारियों की आधिकारिक वेबसाइटों पर उपलब्ध कोविड-19 आउटब्रेक की नवीनतम जानकारी से **अवगत रहें** । अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाता, राष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों या अपने नियुक्तकर्ता द्वारा कोविड -19 से स्वयं को और दूसरों को बचाने के तरीके के बारे में दी गई सलाह का पालन करें।

2. स्वच्छता

क) बार-बार एल्कोहोल युक्त हैंड रब या साबुन और जल से हाथ धोएँ। साबुन और जल से हाथ धोने या एल्कोहोल युक्त हैंड रब का प्रयोग करने से हाथों पर रहने वाला विषाणु मर जाता है।

ख) शारीरिक स्पर्श और अभिवादन करने हेतु हाथ मिलाने से बचें।

ग) सार्वजनिक स्थान पर न थूकें।

घ) आंखों, नाक और मुंह को बार-बार छूने से विषाणु आ सकते हैं, इससे बचें। एक बार संक्रमित होने पर, हाथ विषाणु को आपकी आंख, नाक या मुंह में स्थानांतरित कर सकते हैं। वहां से, विषाणु आपके शरीर में प्रवेश कर सकता है और संक्रमण का कारण बन सकता है।

ङ) जब भी संभव हो, दस्तानों का प्रयोग करें।

च) गुड रेस्पिरेट्री हाइजीन को बढ़ावा दिया जाए। इसका अर्थ खांसी या छींक आने पर मुड़ी हुई कोहनी या टिशू पेपर/रूमाल से मुंह और नाक को ढकना है। खांसने या छींकने के बाद टिशू पेपर को फेंक दें/रूमाल को धो लें।

3. सामाजिक दूरी

क. खांसते या छींकने वाले किसी भी व्यक्ति से कम से कम 1 मीटर (3 फीट) की सामाजिक दूरी बनाए रखने की सलाह दी जाती है। पार्क, बाजार और धार्मिक स्थानों जैसी भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर न जाने की भी सलाह दी जाती है।

ख. सबसे अच्छा है यथासंभव घर पर रहें और यदि हो सके, तो यात्रा को पुनर्निर्धारित करें।

ग. यदि किसी को बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई हो, तो तुरंत एक चिकित्सक से परामर्श लें और सभी निर्देशों का पूरी सावधानी से पालन करें।

4. बुजुर्गों, बच्चों, इम्यूनो कॉम्प्रोमाइस्ड या सहरुग्णता वाले रोगी अथवा प्रसव के दौरान महिलाओं और बच्चे के जन्म के पश्चात के मामलों में **अतिरिक्त देखभाल** होनी चाहिए।

5. **कोविड -19 पॉजिटिव महिलाएं** यदि स्तनपान करना चाहें तो करा सकती हैं। उन्हें उपरोक्त वर्णित सभी स्वच्छता/निवारक उपाय अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6. **आहार:** व्यक्ति की पाचन शक्ति को देखते हुए ताजा, पके हुए गर्म भोजन के माध्यम से उचित पोषण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

- आर्द्रता बनाए रखने के लिए औषधीय जड़ी बूटियों (विशेषतः शुंठी, दालचीनी, त्रिकटु) को उबाल कर एक आरामदायक गर्म तरल पदार्थ का सेवन नियमित पेय के रूप में किया जाना चाहिए।
- ताजा तैयार किया गया लघु-सुपाच्य आहार (आसानी से पचने वाला, हल्का आहार) लें।
- उत्तम सब्जियां सहजन (मोरिंगा ओलीफेरा लैम), करैला (मोमोर्डिका चारेंटिया लिन्न), पटोल (ट्राइकोसैन्थस डियोइका. रोक्सब), मुदग (विगनार्दिता (एल.) आर. विल्जेक), पाठा (सिस्मैम्पेलोस पेरिटाल लिन्न.), वास्तुक (चेनोपोडियम एल्बम एल.); जीवंती (लेप्टेडेनिया रेटिकुलेट (रेटज़.) वाइट एंड अर्न), तण्डुलीयक (अमरान्थस स्पिनोसस एल.), काकमाची (सोलन्यूनिग्रम लिन्न), द्राक्षा (वितिस विनिफेरा एल.), कपित्थ (फेरोनिया लिमोनिया (लिन्न.), अनार (पुनिका ग्रेनटम लिन्न.), लशुन (एलियम सैटिवम एल.) आदि हैं। (संदर्भ: योग रत्नाकर, ज्वर चिकित्सा, वैद्य लक्ष्मीपति शास्त्री, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 251 -253 और गोविंददास। भैषज्य रत्नावली। शास्त्री आरडी, संपादक अठारवां संस्करण। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान; 2005. ज्वर अधिकार)
- मीठे खाद्य पदार्थों और भोजन के प्रयोग से बचें जो पचाने में भारी होते हैं। (योग रत्नाकर) ठंड, तले हुए, तैलीय, किण्वित खाद्य पदार्थों, शीतल और रेफ्रीजिरेटिड भोजन / पेय पदार्थों का उपयोग न करने की भी सलाह दी जाती है।

7. तनाव का सामना करें।

लॉकडाउन अवधि के दौरान तनाव, डर या गुस्सा महसूस करना सामान्य है। लोगों से बात करके तनाव से निजात पाने में मदद मिल सकती है। मित्रों और परिवार से जब भी संभव हो, संपर्क करें।

एक स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने रखें। उचित आहार, व्यायाम करें व नींद लें और घर पर प्रियजनों के साथ, ईमेल और फोन द्वारा अन्य परिवार और दोस्तों के साथ सामाजिक संपर्क को बढ़ावा दिया जा सकता है।

तनाव से निपटने के लिए रुचि के अनुसार किताबें पढ़ें, हल्का संगीत भी सुनें।

तनाव से निपटने के लिए धूम्रपान और एल्कोहोल या अन्य दवाओं के सेवन से बचें। यदि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता हो, तो परामर्श प्रदान किया जा सकता है।

बच्चे की प्रतिक्रियाओं के समाधान में सहायता करने को बढ़ावा दें। उनकी चिंताओं को ध्यान से सुनें और उन्हें अतिरिक्त समय और प्यार दें तथा उन पर ध्यान दें।

8. **व्यायाम व ध्यान**- आयुष मंत्रालय की सलाह के अनुसार कम से कम 30 मिनट के लिए **व्यायाम और ध्यान**, योगासन, प्राणायाम का दैनिक अभ्यास करना है।

9. **सम्यक निद्रा**- रात में 7-8 घंटे की **पर्याप्त नींद** आवश्यक है और इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। दिन के समय न सोने की सलाह दी जाती है।

10. **यदि कोई सहरुग्णता हो तो, चिकित्सकीय देखरेख में निर्दिष्ट औषधियां ली जानी चाहिए।** स्वयं औषधि न लें।

11. आयुर्वेद चिकित्सक के परामर्श / पर्यवेक्षण में **मौसमी आहार (ऋतुचर्या)** को हमेशा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

12. चिकित्सा देखभाल के दौरान स्वास्थ्य देखभाल अधिकारियों की सलाह के अनुसार **पर्याप्त व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई)** के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए।

1.2 समकालीन दिशानिर्देश:

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सार्स-कोव 2 संक्रमण का संदेह होने पर गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण के नैदानिक उपचार के लिए दिशानिर्देशों को अपनाने को कहा है। इन दिशानिर्देशों का अभिप्रेत गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण (एसएआरआई) के साथ या वयस्क, गर्भवती और बाल रोगियों की देखभाल में सम्मिलित उन चिकित्सकों के लिए है जिन्हें कोविड-19 विषाणु से संक्रमित होने का संदेह है।

1.3 रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली एकल औषधियां:

1. **गुडूची²** : गुडुची (टिनोसपोरा कोर्डिफोलिया (थुनब.मियर्स) के 500 से 1000 मिलीग्राम वाले जलीय एक्स्ट्रेक्ट का सेवन।

2. **आंवला³** : आंवले के ताजे फल (इंडियन गूज़बैरी – एम्बिलिका ओफिशिनलिस एल./फिलेन्थुस एम्बिलिका एल.) का या आंवला कैन्डी का सेवन करने की भी सलाह दी जाती है।

3. **हरिद्रा⁴** : गर्म जल के साथ हल्दी पाउडर (कुरकुमा लोंगा एल) या चुटकी भर नमक डालकर गरारे करें।

4. **तुलसी⁵** : तुलसी (तुलसी के पत्ते - ओकिमम टेनुईफ्लोरम एल मेरर (पर्याय ओकिमम टेनुईफ्लोरम एल) वाले जल को बार-बार घूंट-घूंट कर पीने की सलाह दी जाती है।

5. अश्वगंधा की जड़ का चूर्ण 3-5 ग्राम दिन में दो बार गर्म दूध या जल के साथ या अश्वगंधा एक्स्ट्रेक्ट 500 मिलीग्राम दिन में दो बार गर्म जल के साथ लें।

1.4 रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले औषधयोग:

- च्यवनप्राश अवलेह⁶ - 10 - 12 ग्राम / 1 चम्मच।
- द्राक्षावलेह - 10 - 12 ग्राम / 1 चम्मच।
- इंदुकांत घृत - 10 - 12 ग्राम दिन में दो बार भोजन से पहले, जब भूख लगे।
- अरविन्दासव - भोजन के बाद 15 - 20 मिलीग्राम गर्म जल की समान मात्रा के साथ।
- बालचातुर्भद्र चूर्ण - 1 - 2 ग्राम शहद के साथ।
- हरिद्रा खंड - 3 - 5 ग्राम शहद / गर्म जल के साथ बार-बार।

1.5 रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जीवनशैली निर्देश (दिनचर्या)

प्रातःकालीन व्यवस्था (प्रातः 4.30 बजे से 8.30 बजे तक)

- सुबह 4:30 - 5:00 बजे या सूर्योदय से 45 मिनट पहले जागें।
- 1-3 गिलास गर्म जल पिएं।
- गंडुष / कवल (ऑइल पुलिंग) कवल के लिए तिल या नारियल तेल 1 बड़ी चम्मच लेकर गर्म जल से कुल्ला करें।
- एक चुटकी हल्दी और नमक, त्रिफला और यष्टिमधु को गर्म जल में मिलाकर गरारे करें। शुद्ध टंकण (2% जलीय घोल), मधुदक (5% जलीय घोल) का उपयोग कवल गृह के लिए भी किया जा सकता है।
- नासिका स्वास्थ्य – प्रतिमर्श नस्य (प्रत्येक नथुने में तिल / नारियल के तेल की 2 बूंदें डालें)।
- आयुष मंत्रालय की सलाह के अनुसार रोज कम से कम 30 मिनट के लिए योगासन, प्राणायाम और ध्यान करें।
- गर्म जल से स्नान करें।

दोपहर के बाद की व्यवस्था

- दिन के समय न सोयें।
- घर/ आंतरिक मनोरंजक गतिविधियों जैसे अध्ययन, पढ़ना, चित्रकारी, बागवानी, खेलना-संगीत सुनना, सोशल मीडिया आदि कार्य करना।

संध्या व्यवस्था

- ध्यान / प्राणायाम - 30 मिनट
- आंतरिक मनोरंजक गतिविधियाँ

आहार संबंधी नियम

- भूख लगने पर, पाचन शक्ति (न तो बहुत कम और न ही अधिक) के अनुसार उचित मात्रा में भोजन करें।
- हमेशा ताजा और गर्म आहार लें।

- आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थ खाएं।
- सूर्यास्त के 3 घंटे बाद या रात 8 बजे तक रात्रि भोजन करें।

रात्रि भोजन करने के 2-3 घंटे बाद सोएं। पर्याप्त नींद स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है।

1.6 अन्य सामान्य उपाय:

धूपन- घर में हर शाम को नीम पत्र, सरसों (ब्रैसिका कैम्पेस्ट्रिस एल.), लोबान (गम बेजामिन / बेंजॉइन - स्टायरेक्सबेंजॉइन ड्रायण्ड), कर्पूर (सिनमोमं कैम्फोरा (एल) जे. प्रेसल.), घी आदि रोगाणुरोधियों का प्रयोग कर धूपन - (कर्मफूमिगेशन) करें। उपलब्धता के अनुसार अपराजित धूम चूर्ण (अ.ह. ज्वर चिकित्सा) का उपयोग भी किया जा सकता है।

संदर्भ

1. क्लीनिकल मेनेजमेंट ऑफ सीवियर एक्यूट रेस्पिरेट्री इन्फेक्शन (SARI) वेन कोविड-19 डिजीज इस सस्पेक्टिड: अंतरिम गाइडेंस (संस्करण 1.2), विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO / 2019-एन-कोव / नैदानिक / 2020.4) द्वारा 13 मार्च, 2020 को जारी की गई।
2. उपाध्याय एके, कुमार के, कुमार ए, मिश्रा एच.एस. टिनोस्पोरा कोर्डिफ़ोलिया (विल्ड.) हुक. एफ. एंड थॉमस। (गुडूची) – वेलिडेशन ऑफ द आयुर्वेदिक फार्माकोलॉजी थ्रू एक्सपेरिमेंटल एंड क्लीनिकल स्टडीज़ इंटर. ज. आयुर्वेद रिसर्च। 2010; 1 (2): 112-121। doi: 10.4103 / 0974-7,788.64405
3. इब्राहिम जंतन एम, हक ए, इलंगकोवन एम, अरशद एल। एन इनसाइट्स इनटु द मोड्यूलेटरी इफेक्ट्स एंड मैकैनिज्म ऑफ एक्शन ऑफ फ़िलन्थुस स्पीशिज एंड देयर बायोटेक्टिव मेटाबोलाइट्स ऑन द इम्यून सिस्टम। फ्रंटियर्स इन फार्माकोलॉजी 2019; 10।
4. जोरोफचियानमोघाडमतौसी एस, अब्दुल कादिर एच, हसंदरविश पी, ताजिक एच, अबुबकर एस, ज़ंडी के। ए रिव्यू ऑन एंटीबेक्टीरियल, एंटीवायरल एंड एंटीफंगल एक्टिविटी ऑफ कूरक्यूमिन। बायोमेड रिसर्च इंटरनेशनल 2014; 2014
5. घोके एसएस, सूद आर, कुमार एन, ईटी एएल। इवैल्यूएशन ऑफ एंटीवायरल एक्टिविटी ऑफ ओसिमम सेंकटम एंड एकाशिय एराबिका लीव्स एक्स्ट्रेक्ट्स अगेन्स्ट H9N2 वायरस यूजिंग एम्ब्रियोनेटिड चिकन एग मॉडल बीएमसी कोम्लिमेंट आल्टरनेटिव मेडिसिन 2018,18 (1): 174। 5 जून, 2018 को प्रकाशित, doi: 10.1186 / s12906-018-2238-1
6. शर्मा आर, मार्टिस एन, कुका के, चौधरी ए, काबरा ए, राव एमएम, प्रजापति पीके। च्यवनप्राश: ए ट्रेडिशनल बायोएक्टिव हैल्थ सप्लीमेंट, बायोमोलिक्युल्स, 2019 मई; 9 (5): 161।

लक्ष्य समूह 2

हल्के, गंभीर लक्षण वाले, सहरुग्णता और इम्यूनो-कोंप्रोमाइज्ड स्थिति वाले रोगी

2.1 हल्के लक्षणों का उपचार

गले में खराश होना हल्के लक्षणों वाले कोविड-19 संक्रमण का प्रथम व मुख्य नैदानिक लक्षण है। इसके बाद ज्वर, मायेलजिया, सूखी खांसी, श्वासकष्ट तथा गंभीर अवस्था में न्यूमोनिया, गंभीर श्वासकष्ट, फेफड़ों का फाइब्रोसिस के साथ मल्टी ऑर्गन फेलियर और मृत्यु हो जाती है। मामलों में कुछ प्रतिशत मामले बिना लक्षण वाले और कुछ असामान्य नैदानिक मेनिफेस्टेशन जिसमें गंध और स्वाद का न होना (रस-गंध बोध निपट) शामिल है, वाले हैं।

हल्के लक्षण हेतु खुराक के साथ चरण और औषधियां दर्शाते हुए

चरण	नैदानिक प्रस्तुतिकरण	औषधियां	खुराक** और समय	
अगंभीर रोग	ज्वर, कफ, गले में खराश, नेसल कंजेशन, बैचैनी और सिर दर्द	प्रथम लाइन (प्रभावी ज्वर-अंगमर्द)	<ul style="list-style-type: none"> ● महासुदर्शन घन वटी - 	500 मिलीग्राम दिन में तीन बार
		<ul style="list-style-type: none"> ● संजीवनी वटी* 	125 मिलीग्राम दिन में तीन बार	
		<ul style="list-style-type: none"> ● संशमनी वटी 	500 मिलीग्राम दिन में तीन बार	
		<ul style="list-style-type: none"> ● तालीसादि चूर्ण + यष्टिमधु चूर्ण 	2 ग्राम +1ग्राम - दिन में तीन बार	
		<ul style="list-style-type: none"> ● सितोपलादी चूर्ण 	3 ग्राम - दिन में तीन बार	
		<ul style="list-style-type: none"> ● लोजेंजिज़- व्योषादि वटी*/ लवंगादीवटी/ यष्टिमधु घन वटी 	2 टेबलेट - दिन में तीन बार	
		<ul style="list-style-type: none"> ● चतुर्थक ज्वरहर कषाय (200 मिलीग्राम जल के साथ सूखा या गीला गिलोय का तना- 5 ग्राम+ आमलकी-सूखी - 5 ग्राम+ नागरमोथा-- 5 ग्राम काढा जिसे 100 मिलीलीटर तक कम कर दिया गया है) ● पथ्यादी कषायम/ गुडुच्यादी कषायम/ भारङ्ग्यादि कषायम 	- एक गिलास जल में 10 ग्राम उबालना है, इसे आधा कर खाली पेट लेना है (दिन में दो बार)	
द्वितीय लाइन	<ul style="list-style-type: none"> ● त्रिकटु सिद्ध जल* 	1 लीटर जल में 3		

		(प्रभावी श्वासकास)		ग्राम उबालें
			<ul style="list-style-type: none"> ● व्याघ्रि हरीतकी लेह * ● अगस्त्य रसायन ● कंटकारी अवलेह* 	10ग्राम -दिन में दो बार
			● सैधव नमक और हल्दी पाउडर को मिलाकर गरम जल के गरारे करें	यथा आवश्यक मात्रा
			● अमृतारिष्ट	20 मिलिलीटर समान मात्रा में जल के साथ दिन में दो बार
			● षडंग -पाणीय	यथा आवश्यक मात्रा
			● प्रतिदिन यष्टिमधु फाण्ट (200 मिलीलीटर गुनगुना जल + 5 ग्राम यष्टिमधु चूर्ण) से 3-4 बार गरारे करें	यथा आवश्यक मात्रा
			● श्वासकुठार रस + नारदीय लक्ष्मीविलास रास	शहद के साथ 250 मिलीग्राम- दिन में तीन बार
	मायेलजिया हेतु		<ul style="list-style-type: none"> ● अश्वगंधारिष्ट और/ या ● बलारिष्ट 	- 15-20 मिलीलीटर समान जल के साथ दिन में तीन बार
			● रास्नासप्तक कषाय*	- एक गिलास जल में 10 ग्राम उबालें, आधा होने पर खाली पेट पियें
हल्का न्यूमोनिया	सांस लेने में कठिनाई/ जल्दी-जल्दी सांस लेना >40 साँसें प्रति मिनट	प्रथम लाइन	<ul style="list-style-type: none"> ● धान्वन्तर गुटिका ● समीरपन्नग रस*/ श्रङ्गराभ्र रस 	जीरक जल के साथ 2 टेबलेट 250 मिलीग्राम - शहद के साथ- दिन में दो बार
			● अणु तैल/ षडबिंदु तैल/ सषर्प तैल के साथ मर्श नस्य* (शिरोविरेचन)	आयु के अनुसार मात्रा

			● अजवाइन/ पुदीना/ यूकेलिप्टस ऑइल से भाप लेना	दिन में एक/ दो बार
		द्वितीय लाइन	● सोमासव *	10 मिलीलीटर समान जल के साथ दिन में दो बार
			● दशमूलारिष्ट*	20 मिलीलीटर समान जल के साथ दिन में दो बार
		द्वितीय लाइन	● के पिप्पलीचूर्णप्रक्षेप (1 ग्राम) साथ दशमूल काथ*	एक गिलास जल में 10 ग्राम उबालें, आधा होने पर खाली पेट पियें

* गर्भवती और स्तनपान कराणे वाली महिलाओं के लिए नहीं है।

** यहां पर दर्शाई गई खुराक वयस्क खुराक है, बच्चों के लिए इसमें आयु के अनुसार परिवर्तन किया जाना है।

सभी रोगियों को इस दिशानिर्देश में दी गई रसायन औषधियों के साथ दीपन और पाचन औषधियां लेने की सलाह दी जानी चाहिए।

नोट: उष्ण और तीक्ष्ण औषधियां, जिनका गर्भावस्था में प्रयोग नहीं किया जा सकता गर्भवती महिलाओं को नहीं दी जा सकती।

2.2 गंभीर लक्षणों के उपचार हेतु दिशानिर्देश

डिस्कलेमर: चिकित्सक द्वारा परिस्थिति/ निर्णय के अनुसार पारंपरिक (conventional) औषधियों के साथ या उनके बिना निम्नलिखित औषधियां देने की सिफारिश की गई है।

कोविड19 मामलों के लिए निर्धारित औषधियां

1	अगंभीर मामले	निर्धारित औषधियां
1.1.	ज्वर	<ol style="list-style-type: none"> 1. महासुदर्शनघन वटी* - 500 मिलीग्राम गुनगुने जल के साथ दिन में दो बार 2. अमृतारिष्ट - भोजन के बाद 15-20 मिलीलीटर दिन में दो बार जल के साथ 3. अमृतोत्तर कषाय - भोजन से पहले 15 मिलीलीटर जल के साथ 4. विषमज्वरांतक लौह (स्वर्ण युक्त)* - उच्च ज्वर में दुर्बलता- 125 मिलीग्राम जल के साथ 5. मृत्युंजय रस* - मायेलजिया में अनियंत्रित ज्वर- 125 मिलीग्राम जल के साथ 6. संशमनी वटी- 500 मिलीग्राम भोजन के बाद 2 टेबलेट दिन में दो बार 7. अर्क यवानी * - दीपनपाचन ज्वर अरुचि- 10 – 25 मिलीलीटर जल के साथ 8. पथ्यादी कषायम* /गुडूची कषायम / भारड्यादि कषायम* - भोजन से पहले ताजा निर्मित 30-40 मिलीलीटर दिन में दो बार जल के साथ

	9. चतुर्थक ज्वरहर कषाय (200 मिलीलीटर जल के साथ सूखा या गीला गिलोय का तना- 5 ग्राम+ आमलकी-सूखी - 5 ग्राम+ नागरमोथ-- 5 ग्राम का घोल और इसे 100 मिलीलीटर तक कम कर दिया गया है)
	10. त्रिभुवनकीर्ति रस* भोजन के बाद शुंठीजल या जल के साथ 125 मिलीग्राम
	11. बिल्वादि वटी 1 गोली दिन में 3 बार
1. अगंभीर मामले	निर्धारित औषधियां
1.2 गले में खराश	1. व्योषदिवटी/ लवंगादि वटी/ खदिरादी वटी -2 टेबलेट दिन में तीन बार 2. लक्ष्मीविलास रस भोजन के बाद ताम्बूलस्वरस के साथ 125 मिलीग्राम दिन में 3 बार
1.3 नेजल कंजेशन (प्रतिश्याय)	1. हरिद्राखंड- गुनगुने जल/ दूध के साथ 3 – 5 ग्राम दिन में दो बार 2. लक्ष्मीविलास रस भोजन के बाद ताम्बूल स्वास के साथ 125 से 250 मिलीग्राम दिन में दो बार
1.4 माइलगिया (पार्श्व- शूल, शिरशूल, अंगमर्द)	1. रास्ना सप्तक*- क्वाथ- भोजन से पहले 30 – 40 मिलीलीटर दिन में दो बार 2. अश्वगंधारिष्ट जल के साथ 15 – 20 मिलीलीटर दिन में दो बार 3. बलारिष्ट जल के साथ 15 – 20 मिलीलीटर दिन में दो बार 4. देवदाव्यादि क्वाथ* भोजन से पहले 30 – 40 मिलीलीटर दिन में दो बार 5. दशमूलक्वाथ* भोजन से पहले 30 – 40 मिलीलीटर दिन में दो बार 6. गोदंतीभस्म 500 मिलीग्राम- 1 ग्राम प्रतिदिन घी, शर्करा, उष्ण क्षीर या जल के साथ दिन में दो या तीन बार
1.5 कफ (वातजकास)	1. तालीसादि चूर्ण (4 ग्राम)+ मधुयष्टिचूर्ण (2 ग्राम) शहद/ उष्ण जल के साथ दिन में 2 बार 2. सितोपलादी चूर्ण- शहद के साथ 3-6 ग्राम या आवश्यकतानुसार दिन में 2 या 3 बार 3. टंकणभस्म* – 250 – 500 मिलीग्राम दिन में 2 बार 4. दशमूलकटुत्रयादी कषाय* भोजन से पहले जल के साथ 20 – 30 मिलीलीटर दिन में 3 बार
1.6 डिहाइड्रेशन (ज्वर के कारण तृष्णा)	1. षडंगपानीय 40 मिलीलीटर/ आवश्यकतानुसार दिन में तीन बार

2. न्यूमोनिया – श्वासप्रधानकास

1. संजीवनी वटी * - 125 मिलीग्राम गुनगुने जल से दिन में 3 बार या गोरोचनादि वटी * - गुनगुने जल के साथ 125 मिलीग्राम दिन में 3 बार

2. सोमासव / पुष्करमूलासव * - जल की समान मात्रा के साथ 10 - 20 मिलीलीटर दिन में दो बार

3. तालीसादि (4 ग्राम) + मधुयष्टिचूर्ण (2 ग्राम) + समीरपत्राग रस (125 मिलीग्राम)* दिन में दो बार शहद/गुनगुने जल के साथ।
4. पुष्करमूलासव- जल की समान मात्रा के साथ 15 - 20 मिलीलीटर दिन में 2 या 3 बार
5. अगस्त्य हरीतकी * / व्याघ्रि हरीतकी / चित्रक हरीतकी अवलेह * - भोजन के बाद जल के साथ 10 - 12 ग्राम दिन में 2 बार
6. कंटकारी अवलेह * भोजन के बाद 10 - 12 ग्राम दिन में 2 बार
7. दशमूलकटुत्रयादी कषाय* भोजन से पहले जल के साथ 20 - 30 मिलीलीटर दिन में 3 बार
8. वासकासव * भोजन के बाद जल के साथ 15 - 20 मिलीलीटर दिन में 3 बार
9. भारङ्ग्यादि काथ * भोजन से पहले 30 - 40 मिलीलीटर दिन में दो बार
10. चंद्रामृत रस * - शहद या ताम्बूलस्वरस या वासास्वरस या आर्द्रक स्वरस के साथ 250 मिलीग्राम दिन में 2 बार

3. एक्वूट रेस्पिरेटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम - श्वास

1. कर्पूर और नीलगिरितैल का नासा मार्ग से लेना
2. श्वासकुठार रस (125 - 250 मिलीग्राम) कंटकारी (2 ग्राम) व पिप्पली चूर्ण (1 ग्राम) * को सरसों के तेल और गुड़ के साथ देना
3. मल्लसिंदूर * 125 मिलीग्राम + तालीसादिचूर्ण 3 ग्राम + शृंगभस्म 125 मिलीग्राम + अभ्रकभस्म 125 मिलीग्राम को भोजन के पश्चात दिन में 2 बार देना।
4. सैधवादि तैल को वक्ष स्थल पर लेपन के पश्चात नाड़ी स्वेदन।

4. इम्यूनोकॉप्रोमाइज्ड कंडीशंस – व्याधिक्रमत्व में कमी

1. संशमनी वटी 500 मिलीग्राम गोली, भोजन के बाद 2 गोली दिन में 2 बार
2. अगस्त्य हरीतकी रसायन * भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
3. चित्रक हरीतकी रसायन * भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
4. च्यवनप्राश अवलेह भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
5. ब्राह्म रसायन भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
6. स्वर्णमालिनीवसंत रस 125 मिलीग्राम भोजन के पश्चात दिन में 2 बार
7. गुडुची रसायन

2.3 सह - रुग्णता

2.3.1 मधुमेह

यदि मधुमेह उपरोक्त लक्षणों के साथ जुड़ा हुआ है, तो वर्तमान औषधियों के सेवन के अतिरिक्त निम्नलिखित औषधियां दी जा सकती हैं (संदर्भ- उपरोक्त तालिका)

- निशामलकी चूर्ण + मुस्ता चूर्ण - 3-6 ग्राम भोजन से पहले जल के साथ दिन में 2 बार
- जंबुचूर्ण * 3 -6 ग्राम भोजन से पहले जल के साथ
- गुड़ची चूर्ण 3-6 ग्राम भोजन से पहले जल के साथ
- वसंतकुसुमाकर रस - 125 - 250 मिलीग्राम भोजन के बाद जल के साथ दिन में 2 बार
- अभ्रकभस्म 125-250 मिलीग्राम शहद या घी या त्रिफलाकाथ या गुड़चीस्वरस या आर्द्रक स्वरस के साथ दिन में दो बार
- बिंदु संख्या 1.1- 1.6, 2, 3 में वर्णित लक्षणों के अनुसार अन्य औषधियां

** तालीसादी व मधुयष्टि चूर्ण और सोमासव देने से बचें।

2.3.2 हृदय संबंधी रोग

यदि हृदय संबंधी रोग उपरोक्त लक्षणों से जुड़े हैं, तो वर्तमान औषधियों के सेवन के अतिरिक्त निम्नलिखित औषधियां दी जा सकती हैं (संदर्भ- उपरोक्त तालिका)

- अश्वगंधा चूर्ण (3 ग्राम) + अर्जुन चूर्ण (3 ग्राम) - भोजन से पहले दूध / जल के साथ दिन में 2 बार
- प्रभाकर वटी * (आईएचडी / एमआई वाले रोगियों में) - 125 - 250 मिलीग्राम भोजन के बाद दिन में 3 बार
- हृदयार्णव रस * 125 मिलीग्राम भोजन के बाद दिन में 2 बार
- अर्जुनारिष्ट 15 - 20 मिलीलीटर भोजन के बाद समभाग जल के साथ दिन में 2 बार
- सारस्वतारिष्ट 15 - 20 मिलीलीटर भोजन के बाद समभाग जल के साथ दिन में 2 बार
- कुष्मांड रसायन 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
- धान्वंतरगुटिका * 250 - 500 मिलीग्राम जीरक काथ या गर्म जल के साथ दिन में 2 बार
- सर्पगंधाघनवटी * 250 - 500 मिलीग्राम दूध या जल के साथ दिन में एक या दो बार

- नवजीवन रस * 62.5 - 125 मिलीग्राम दूध के साथ दिन में एक बार
 - बिंदु संख्या 1.1- 1.6, 2, 3 में वर्णित लक्षणों के अनुसार अन्य औषधियां

6.3.3 वृक्क रोग

यदि वृक्क रोग उपरोक्त लक्षणों से जुड़े हैं, तो वर्तमान औषधियों के सेवन के अतिरिक्त निम्नलिखित औषधियां दी जा सकती हैं (संदर्भ- उपरोक्त तालिका)

- दशमूलकृाथ * भोजन से पहले (ताजा तैयार 30 - 40 मिलीलीटर) दिन में 2 बार
- वरुणादिकृाथ * (रीनल कोंप्रोमाज्ड स्थिति हेतु) ताजा तैयार किया हुआ 30 - 40 मिलीलीटर जल के साथ दिन में 2 बार
- तृणपंचमूलकृाथ (रीनल कोंप्रोमाज्ड स्थिति हेतु) ताजा तैयार किया हुआ 30 - 40 मिलीलीटर जल के साथ दिन में 2 बार
- चंद्रप्रभा वटी * 2 टेबलेट (250 मिलीग्राम) भोजन के बाद जल के साथ दिन में 2 या 3 बार
- शिलाजत्वादि लौह (250मिलीग्राम) भोजन से पहले गर्म जल के साथ
- वेदुमरनगुलिका * 250 - 375 मिलीग्राम गर्म जल के साथ रोजाना दिन में दो या तीन बार
 - बिंदु संख्या 1.1- 1.6, 2, 3 में वर्णित लक्षणों के अनुसार अन्य औषधियां

** गर्भवस्था और स्तनपान कराने वाली महिलाओं में निषेध*

2.4 वांछनीय आहार

- भूख लगने पर ताजा तैयार गर्म भोजन खाएं।
- **तरल पदार्थ** - चाय के अतिरिक्त, निम्नलिखित में से कुछ भी लेने की सलाह दी जाती है।
 - ½ इंच अदरक + 2 काली मिर्च + ¼ दालचीनी या लेमन ग्रास से तैयार हर्बल टी, 2 कप जल में तुलसी के पत्तों को उबाल कर 1कप तक कम करें और इसमें 1 चम्मच शहद मिलाएँ।
 - 1 कप गाय का गर्म दूध सूखा अदरक पाउडर / हरिद्रा चूर्ण ½ चम्मच के साथ
 - अनाज - षष्टिकशाली (पुराना चावल) / लाजा / गोधुम (गेहूँ) / यव (जौ)
 - **दलहन** - मुदग (फेसेओलुस रेडिएटस लिन्न), मसूर (लेंस सिनुलारिस मेडिक), कुलथी (डोलिचोस बीफ्लोरस लिन्न), चना, मोठ।
 - **सब्जियाँ** - वार्त्ताक (सोलानुम मेलोंगिना एल.), कर्कोटक (मोमोर्डिका डाईओशिया रोक्स्ब. एक्स विल्ड.), शिगू (मोरिंगा ओलिफेरा लैम), कारवेल्लम (मोमोर्डिका चेरेंटिया लिन्न), पटोल (ट्राईकोसैन्थेस डाईओशिया रोक्स्ब.),

पाठा (सिसेंपेलोस पेरिएटा लिन्न), वास्तुक (चेनोपोडियम एल्बम एल.), जीवंती (लेष्टाडेनिया रेटिकुलाटा (रेट्ज़।) वाइट एंड अर्न), तष्डुलीयक (अमरान्थुस स्पिनोसस एल.), काकमाची (सोलानुम निग्रम लिन्न.), गुडूची (टीनोस्पोरा कोर्डिफ़ोलिया (थुनब.) मियर्स)

• **फल** - द्राक्षा (वितिसि विनिफ़ेरा एल.), कपित्थ (फेरोनिया लिमोनिया (लिन्न.)), दाड़िम (पुनिकाग्रनेथम लिन्न) लिया जा सकता है।

• **मसाले**: इलायची / सूखी अदरक / काली मिर्च / पिप्पली / लहसुन

लक्ष्य समूह 3

जोखिम वाले समूह (गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ, बच्चे और वृद्धावस्था रोगी)

3.1 भूमिका

बच्चे, गर्भवती महिलाएँ, बुजुर्ग लोग, कुपोषित लोग और बीमार या इम्यूनो-कॉम्प्रोमाइज्ड रोगी, विशेष रूप से किसी भी स्वास्थ्य संबंधी मुसीबत की चपेट में आते हैं और वे अपेक्षाकृत आपात स्थितियों से जुड़े उच्च जोखिम वाले रोगों का सामना करते हैं। रोकथाम और उपचार के मामले में जनसंख्या के इन समूहों को विशेष देखभाल की आवश्यकता है। रोकथाम का सबसे अच्छा तरीका रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना है और यहां कुछ सिद्ध रोग प्रतिरोधक क्षमता बूस्टर या रसायन औषधियां हैं जो जोखिम वाले समूहों को दी जा सकती हैं। प्रसवोत्तर और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ बच्चे को स्तनपान कराना जारी रख सकती हैं, और स्तनपान करने वाले बच्चे को बचाव के लिए खुराक भी दी जा सकती है।

ये जोखिम वाले समूह, यदि कोविड 19 पॉजिटिव टेस्ट या उसके बिना हल्के या गंभीर लक्षणों वाले संदिग्ध, क्वारंटाइन या आइसोलेशन वाले मामलों में आते हैं, तो लक्ष्य समूह 2 में वर्णित उपचार ही किया जाएगा।

प्रत्येक श्रेणी में कुछ सामान्य रूप से निर्धारित रसायन औषधियां निम्नलिखित हैं, हालांकि चिकित्सकों को ज्वर या अन्य लक्षणों की अनुपस्थिति और भूख में सुधार की पुष्टि करनी चाहिए, यदि भूख ना लगे तो दीपन और पाचन औषधियां दी जा सकती हैं।

3.2 बच्चों के लिए रसायन

- इंदुकांत घृतम - 5 - 10 मिलीलीटर मात्रा में गर्म दूध के साथ दिन में 2 बार
- कल्याणक घृतम - 5 - 10 मिलीलीटर मात्रा में गर्म दूध के साथ दिन में 2 बार
- अरविंदासव - 5 - 15 मिलीलीटर मात्रा में गर्म दूध के साथ दिन में 2 बार
- बालचातुर्भद चूर्ण - 1-2 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार शहद अनुपान के साथ

बच्चों में औषधियों की खुराक

- 15 साल से ऊपर - वयस्क खुराक

- 10-15 वर्ष के बीच - वयस्क खुराक का ¾
- 5-10 वर्ष के बीच - वयस्क खुराक का ½
- 5 वर्ष से कम - वयस्क खुराक का ¼

विनिर्दिष्ट खुराक गणना:

$$\text{बाल खुराक} = (\text{वयस्क खुराक} / 16) \times \text{बच्चे की आयु}$$

3.3 गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए रसायन

निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग विशेष रूप से गर्भावस्था और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए किया जा सकता है:

- **फलसर्पि** * - 10 - 12 ग्राम मात्रा में गर्म जल के साथ दिन में 2 बार
- **कल्याणक घृत** * - 10 - 12 मात्रा में गर्म जल के साथ दिन में 2 बार
- **अश्वगंधा रसायन** * - प्रतिदिन 10 - 12 ग्राम मात्रा में दिन में दो बार गर्म दूध के साथ।
- **सौभाग्य शूठी लेह** * - प्रतिदिन 10 - 12 ग्राम मात्रा में खाली पेट दिन में दो बार गर्म दूध के साथ।
- **घी के साथ दूध का दैनिक प्रयोग** (एक कप दूध में एक चम्मच घी)

* डिस्क्लेमर - ज्वर से उबरने के बाद और गर्भावस्था के दौरान अग्नि के स्थिर हो जाने के पश्चात रसायन औषधियों का सेवन करना चाहिए।

3.4 वृद्धावस्था रोगियों के लिए रसायन

निम्नलिखित रसायन औषधियां वृद्ध आबादी को दी जा सकती हैं, जैसे कि-

- **च्यवनप्राश अवलेह** - प्रतिदिन 10 - 12 ग्राम दिन में दो बार गर्म दूध के साथ।
- **अश्वगंधा अवलेह** - प्रतिदिन 10 - 12 ग्राम दिन में दो बार गर्म दूध के साथ।
- **ब्राह्म रसायन** - प्रतिदिन 10 - 12 ग्राम दिन में दो बार गर्म दूध के साथ।
- **घी के साथ दूध का दैनिक प्रयोग** (एक कप दूध में एक चम्मच घी)
- **शिलाजीत रसायन** [त्रिफला, मुस्ता, गुडूची (टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया), पिप्पली आदि) के 7 भावना से तैयार – संदर्भ अ. ह. 39/133-142]
- **खदिरादि रसायन** [संदर्भ अ. ह. 39/152]

● शतावरी सिद्ध घृत [संदर्भ अ. ह. 39/156]

वर्धमान क्रम में निम्नलिखित रसायन औषध योग की सलाह चिकित्सक की सख्त निगरानी में दी जा सकती है:

● वर्धमान पीपली रसायन [कास, श्वास, गलग्रह, विषम ज्वर - संदर्भ अ. ह. 39 / 101-102]

● वर्धमान गुडूची रसायन [संदर्भ अ. ह. 39 / 104-105]

● वर्धमान मुस्ता रसायन [संदर्भ अ. ह. 39 / 104-105]

● वर्धमान त्रिफला रसायन [संदर्भ अ. ह. 39 / 104-105]

3.5 इम्यूनो- कोंप्रोमाइज्ड रोगियों के लिए रसायन

1. संशमनी वटी 500 मिलीग्राम गोली, भोजन के बाद 2 गोली दिन में 2 बार
2. अगस्त्य हरीतकी रसायन * भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
3. चित्रक हरीतकी रसायन * भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
4. च्यवनप्राश अवलेह भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
5. ब्रह्म रसायन भोजन के बाद 10 -12 ग्राम दिन में 2 बार
6. स्वर्णमालिनीवसंत रस - 125 मिलीग्राम भोजन के बाद जल के साथ दिन में 2 बार
7. गुडूची रसायन

उपचारोपरांत पुनर्स्थापनात्मक स्वास्थ्य सेवा

4.1 प्रस्तावना

कन्फ़र्म किए गए कोरोनावायरस मामलों और मौतों के साथ दैनिक उछाल एक तिहाही से अधिक की संख्या में बढ़ रही है: वे लोग जो कोविड-19 से ठीक हो गए हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कोविड-19 को अद्वितीय एवं जटिल बताया है। ठीक होने वालों की संख्या में वृद्धि के साथ कोविड-19 पर जीत के बारे में कई प्रश्न उठ रहे हैं: एक रोगी की संक्रामकता, बीमारी के बाद की प्रतिरोधक क्षमता और दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में। बीमारी के बाद इस बारे में बहुत कुछ स्पष्ट या अज्ञात नहीं है, और कोरोना वायरस के संदर्भ में "रीकवर" शब्द के बारे में अनिश्चितता भी है।

कोविड -19 मामलों के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय की निर्वहन नीति के अनुसार एक मरीज को 24 घंटों में दो नकारात्मक जांच नमूनों और श्वसन नमूनों में वायरल व वक्ष रेडियोग्राफी स्वच्छता के प्रमाण के बाद ही छुट्टी दी जाती है। प्रारंभिक प्रमाण बताते हैं कि कोरोनावायरस पीड़ितों को नकारात्मक परीक्षण के बाद भी कोविड-19 के स्वास्थ्य प्रभावों का अनुभव हो सकता है। हांगकांग के चिकित्सा विशेषज्ञों ने डिस्चार्ज किए गए कोविड-19 रोगियों की रिपोर्ट में देखा कि मरीजों में सांस की तकलीफ है और कुछ ने फेफड़ों की कार्यक्षमता खो दी है, लेकिन शोधकर्ता अनिश्चित थे कि यह बीमारी कितने समय तक चलेगी।

4.2 समकालीन दिशानिर्देश

डिस्चार्ज के बाद अगले 14 दिनों के लिए सेल्फ क्वारंटाइन की आवश्यकता होती है। यदि इन दिशानिर्देशों का पालन किया जाए तो यह सुनिश्चित करता है कि वायरस का आगे प्रसार नहीं होगा।

4.3 चिकित्सा व्यवस्था

आयुर्वेद की अवधारणाओं के अनुसार कोविड-19 संक्रमण के बाद धातु क्षय व अग्निमांद्य अवस्था होगी। इसलिए नैदानिक सुधार के पश्चात कम से कम 45 दिनों के लिए द्राक्षा (वितिस विनिफेरा एल.) एवं वासा (जस्टिसिया अथाटोड़ा एल.) जैसी औषधियों के साथ धातुपोषण एवं रसायन सेवन और शरीर में वायरस के अवशिष्ट प्रभाव का मुकाबला करने के लिए - शिरिष के साथ विषघ्न चिकित्सा (अल्बिज़िया लेबेक (एल.) बेन्थ.) अथवा हरिद्र चूर्ण (कुरकुमा लोंग) का सुझाव दिया जाता

है। नैदानिक सुधार के पश्चात 45-60 दिनों के लिए हेपेटोप्रोटेक्टिव एवं रीनल प्रोटेक्टिव औषधियां जैसे आमलकी चूर्ण (एम्बलिका ओफिसिनलिस गेयर्टन), भूम्यामलकी (फिलेन्थस निरूरी एल.) आदि एंटीवायरल ड्रग थेरेपी से उत्पन्न विषाक्तता का मुकाबला करने के लिए दी जा सकती हैं। अतिसार, वमन अथवा भूख की कमी के मामले में षडंग पानीय जैसी दीपन पाचन औषधियों का प्रयोग किया जा सकता है। कुछ रोगियों से फिकल शेडिंग का प्रदर्शन किया गया है और सीमित संख्या में केस रिपोर्टों में एक जीवक्षम वायरस की पहचान की गई है। ऐसे मामलों में विडंग चूर्ण, बिल्वादिगुटिका, नीलिथुलस्यादि कषायम के साथ कृमिनाशक थेरेपी का प्रयोग किया जा सकता है।

4.4 औषध योग (मात्रा के साथ)

डिस्कलेमर - व्यक्तियों की अग्नि स्थिति के आधार पर चिकित्सक की उपलब्धता और पसंद के अनुसार निम्नलिखित औषधियों में से कोई भी निर्धारित की जा सकती है।

4.4.1 प्रारम्भिक अवस्था

- महासुदर्शन घन वटी इंदुकांतम कषायम¹ 15मिली + 45 मिली गर्म पानी के साथ भोजन से पहले दिन में दो बार लें अथवा
- अग्निंतुंडी वटी 01 टेबलेट दिन में दो बार 15 – 20 मिली अमृतारिष्टम³ (समान मात्रा में गर्म पानी के साथ) भोजन के बाद दो बार लें।

एक बार अग्नि-पाचन क्षमता पुनः प्राप्त कर ली जाती है जब कभी भूख लगे तो इंदुकांतम घृतम⁴ 10 - 12 ग्राम प्रतिदिन दो बार लें। समूह 1 में रसायन और अन्य प्रतिरोधकता बढ़ाने वाली औषधियों को स्वनिर्णय के अनुसार विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग किया जा सकता है।

4.4.2 रसायन

- भोजन के बाद समान मात्रा में गर्म पानी के साथ द्राक्षारिष्टम⁵ 15 - 20 मिली दिन में तीन बार लें अथवा
- भोजन से एक घंटे पहले दिन में तीन बार द्राक्षादि लेह⁶ 10 – 12 ग्राम लें। (द्राक्षा में फेफड़ों को फिर से जीवित करने की क्षमता होती है) अथवा
- भोजन से एक घंटे पहले दिन में तीन बार वासावलेह/कंटकारी अवलेह⁷ – 10 - 12 ग्राम लें। (वासा/कंटकारी ज्वर, कास, पित्त वृद्ध स्थितियों के लिए एक बहुत ही उपयोगी दवा है;

इसलिए यह स्रोतों में अवशिष्ट 'ख'वैगुण्य को दूर करने में सहायक होगा)

- भोजन से पहले दिन में तीन बार च्यवनप्राश⁸ 10 - 12 ग्राम/अश्वगंधा लेह⁹ 10 - 12 ग्राम लें।
- वर्धमान पिप्पली रसायन
- वसंत कल्प

4.4.3 कृमिनाशक/विषहर

रात्रि में भोजन के 1 घंटे बाद शहद के साथ विडंग चूर्ण¹⁰ 3 - 6 ग्राम लें/

भोजन के बाद तीन बार 1 टेबलेट बिल्वादि गुटिका लें।

4.4.4 पाचन संबंधी विकार

भोजन से 1 घंटे पहले दिन में तीन बार गुनगुने पानी अथवा तक्र (पंचकोलचूर्ण के साथ ताजा तैयार संस्कारित) के साथ दाड़िमाष्टक चूर्ण¹¹ 3 - 6 ग्राम लें।

घी और शहद के साथ दिन में दो बार अष्टचूर्णम - 3 - 6 ग्राम लें।

4.4.5 यकृत रक्षक औषध

गुनगुने पानी के साथ प्रातः खाली पेट आमलकी चूर्ण¹² 3 - 6 ग्राम अथवा त्रिफला चूर्ण 3 - 6 ग्राम लें।

गुनगुने पानी के साथ प्रातः खाली पेट कालमेघ चूर्ण - 3 - 6 ग्राम लें।

4.4.6 वृक्क रक्षक औषध

- गुनगुने पानी के साथ प्रातः खाली पेट रसायन चूर्ण 3 - 6 ग्राम लें
- पानी की समान मात्रा के साथ पुनर्नवासवम - 15 - 20 मिली लें
- चंद्रप्रभा वटी- 2 टेबलेट (250एमजी) भोजन के बाद गर्म पानी के साथ दिन में दो बार/तीन बार लें
- गोक्षुरादि गुग्गुलु- 2 टेबलेट (250एमजी) भोजन के बाद गर्म पानी के साथ दिन में दो बार/तीन बार लें

4.4.7 औषध ग्रहण काल

उक्त औषधियाँ यथा धातु पोषण एवं रसायन, चिकित्सक के निर्णयानुसार 45 दिनों की अवधि के लिए दी जाए

औषधियों का अन्य समूह जो प्रकृति में सुरक्षात्मक हैं, उन्हें चिकित्सक निर्णयानुसार 45-60 दिनों तक

दिया जा सकता है।

4.5 बेहतर आहार आदतें

भोजन से 15 से 20 मिनट पहले तक एक चुटकी सेंधा नमक के साथ अदरक का टुकड़ा (लवणार्द्धक) चबाना भूख में सुधार करता है। सुपाच्य भोजन तैयार करने के लिए शहद, चीनी और फलों के रस, मूंग दाल या दाल का सूप, सब्जियों का सूप, मीट सूप, चावल की खिचड़ी और मूंग दाल (ग्रीन ग्राम) के साथ मिश्रित तर्पणलजा सक्तू (भुने हुए अनाज का पाउडर), गाय के घी के साथ फुल्का, सब्जियां जैसे घीया, तुरई, भिंडी, सीताफल आदि लेनी चाहिए। खाना पकाने में जीरा, काली मिर्च, लहसुन, धनिया, अदरक, अजवाइन जैसे मसालों का उपयोग किया जाना चाहिए।

4.6 योग विधियाँ

शरीर के लचीलेपन को सुधारने और मानसिक तनाव को दूर करने के लिए निम्न योग-आसनों का 15 से 20 मिनट तक अभ्यास किया जा सकता है

- सूक्ष्म व्यायाम (हल्की कसरत) सभी जोड़ों के लिए शिथिल व्यायाम
- बैठे आसन जैसे पद्मासन, सुखासन, वज्रासन, पश्चिमोत्तासन
- चित्त लेटे हुई स्थिति में योगासन : पवनमुक्तासन, हलासन, मत्स्यासन
- अधोमुख स्थिति में योगासन : भुजंगासन, शलभासन
- शिथिल आसन : शवासन, मकरासन
- प्राणायाम : गहरी सांस लेना, नाड़ीशोधन प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम प्रत्येक की 10 पुनरावृत्तियाँ
- ध्यान – 10 मिनट

संदर्भ

1. "आयुर्वेद एवं...- सीसीआरएस के माध्यम से चिकुनगुनिया का उपचार।" 22 सितंबर 2016, http://www.ccras.nic.in/sites/default/files/22092016_MANAGEMENT%20OF%20CHIKUNGUNYA%20THROUGH%20AYURVEDA%20AND%20SIDHA-A%20TECHNICAL%20REPORT.pdf. पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।
2. "औषधीय अनुसंधान की वैश्विक पत्रिका – डबल्यूजेपीआर" 21 नवम्बर 2017,

https://wjpr.net/admin/assets/article_issue/1513597567.pdf. पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।

3. "..... - एजेपीआर द्वारा तैयार की गई अमृतारिष्ट की रोगाणुरोधी गतिविधि"
<https://asianjpr.com/HTMLPaper.aspx?Journal=Asian%20Journal%20of%20Pharmaceutical%20Research;PID=2014-4-2-8>. पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।
4. पेंचला गोली प्रसाद एंड नागलक्ष्मी, वी एंड बाबू, गज्जी एंड स्वामी, गीता द्वारा (2008) में परिणामशूल (डुओडेनल अल्सर) में वर्धमान इंदुकांत घृत का प्रभाव का अध्ययन किया गया। आयुर्वेद एवं सिद्ध में शोध पत्रिका XXIX,. 15-28
5. मसराम, प्रवीण एंड चौधरी, सुहास एंड पटेल, केएस एंड कोरी, वीके एंड राजगोपाल एस. द्वारा (2014) में प्रतिरोधकता और प्रतिरक्षीकरण की आयुर्वेदिक अवधारणा पर एक संक्षिप्त समीक्षा सम्पन्न की गई | AyurpharmInt J AyurAlliSci.. 3. 230-240.
6. मसराम, प्रवीण एंड चौधरी, सुहास एंड पटेल, केएस एंड कोरी, वीके एंड राजगोपाल एस. द्वारा (2014) में प्रतिरोधकता और प्रतिरक्षीकरण की आयुर्वेदिक अवधारणा पर एक संक्षिप्त समीक्षा सम्पन्न की गई II AyurpharmInt J AyurAlliSci.. 3. 230-240.
7. गुप्ता, ए. एंड प्रजापति, पी. के. द्वारा (2011) में तमक श्वास (ब्रॉन्कियल अस्थमा) के उपचार में विभिन्न अवलेह का प्रभाव का अध्ययन किया गया। Ayu, 32(3), 427-431.
<https://doi.org/10.4103/0974-8520.93928>
8. शर्मा आर, मार्टिन्स एन, कूका के, चौधरी ए, काबरा ए, राव एमएम, प्रजापति पी.के. द्वारा 2019 में च्वनप्राशः एक पारंपरिक भारतीय बायोएक्टिव स्वास्थ्य पूरक का अध्ययन किया गया। बायोमोलिक्वुल्स, 9(5),161 <https://doi.org/10.3390/biom9050161>
9. जियाउद्दीन एम, फनसालकर एन, पटकी पी, दिवान्य एस, पटवर्धन बी. द्वारा अश्वगंधा के इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभावों पर अध्ययन किया गया। J Ethnopharmacol. 1996;50(2):69-76. doi:10.1016/0378-8741(95)01318-0
10. पाटिल, यू., एंड 24 और 25 मई 2013 (2013) को अंतर्दृष्टि आयुर्वेद 2013, कोयंबतूर की

कार्यवाही से बहु औषधि प्रतिरोधी बैक्टीरिया के नैदानिक आइसोलेट्स के विरुद्ध विदंग की क्रिमिग्र क्रिया, सही पहचान का महत्व। जीवन का प्राचीन विज्ञान, 32(Suppl 2), S20.

<https://doi.org/10.4103/0257-7941.123834>

11. पूजा, बी. ए. एंड भट्टेड एस. (2015) प्रवाहिका का आयुर्वेदिक उपचार – एक मामले का प्रतिवेदन। Ayu, 36(4), 410–412. <https://doi.org/10.4103/0974-8520.190701>
12. तिलक चंद केआर, मथाई आरटी, सिमोन पी. रवि आरटी, बालिगा- राव एमपी, बालिगा एमएस द्वारा भारतीय आंवला (एम्बलिका ओफिसिनलिस गेयर्टन) के हेपेटोप्रोटेक्टिव गुण: एक समीक्षा सम्पन्न की गई | Food Funct. 2013;4(10):1431–1441. doi:10.1039/c3fo60237k

रोगी अभिलेख प्रपत्र (सीआरएफ़-कोविड 19)

स्क्रीनिंग की तिथि [D][D]/[M][M]/[2][0][Y][Y]				
जनसांख्यिकी				
नाम :				
	अंतिम	प्रथम	मध्य	
जन्म तिथि : ____/____/____			आयु: _____	
लिंग : <input type="checkbox"/> महिला <input type="checkbox"/> पुरुष				
पिता/पति का नाम				
माता का नाम				
पता				
फोन नं. :		ई-मेल:		
स्वास्थ्य कर्मी? <input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात				
प्रयोगशाला कर्मी? <input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात				
गर्भवती? <input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात <input type="checkbox"/> लागू नहीं यदि हाँ : गर्भावधि सप्ताह का मूल्यांकन [][] सप्ताह				
मुख्य शिकायतें				
स्वयं-रिपोर्ट किए गया बुखार अथवा मापा गया बुखार का वृत्तान्त			<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं	
≥38 डिग्री सेल्सियस				

खांसी	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
श्वास कृच्छ्रता (सांस में कमी) अथवा सांस की वृद्धि*	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
गले में खराश	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
जुकाम	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
सामान्य कमजोरी	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
सिर दर्द	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
चिड़चिड़ापन/भ्रम की स्थिति	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
जी मिचलाना/वमन	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
अतिसार	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
अन्य:	
यात्रा वृत्तान्त	
पिछले 14 दिनों में अंतर्राष्ट्रीय यात्रा की गई	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
पिछले 14 दिनों में घरेलू यात्रा की गई	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
संपर्क वृत्तान्त	
प्रयोगशाला में पुष्टि किए गए मामलों का संपर्क	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
एसिम्प्टोमेटिक प्रत्यक्ष एवं उच्च जोखिम संपर्कों वाला कन्फ़र्म मामला	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
प्रारम्भिक एवं महत्वपूर्ण संकेतों की तिथि	
प्रारम्भिक लक्षण (प्रथम/शुरुआती लक्षण की तिथि)	[_D][_D]/[_M][_M]/[_2][_0][_Y][_Y]
तापमान	[_][_].[_]° C
हृदय गति	[_][_][_] धड़कन/मिनट
श्वसन दर	[_][_] साँसे/मिनट
रक्तचाप	[_][_][_] (सिस्टोलिक) [_][_][_] (डायस्टोलिक) mmHg
गंभीर निर्जलीकरण	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
स्टर्नल कैपिलरी पुनः भरने का समय > 2 सेकंड्स	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
ऑक्सिजन परिपूर्णता:	[_][_][_] % on <input type="checkbox"/> कमरे की हवा <input type="checkbox"/> ऑक्सीजन थेरेपी

	<input type="checkbox"/> अज्ञात
ग्लासगो कोमा स्कोर	(GCS/15)[][]
कुपोषण	<input type="checkbox"/> हा <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
मध्य-ऊपरी भुजा परिधि	[][][]मिमी
ऊंचाई:	[][][]सीएम
भार :	[][][]किग्रा
सह-रुग्णता (अज्ञात)	
पुराना हृदय रोग (उच्च रक्तचाप नहीं)	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
उच्च रक्तचाप	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं
पुराना फेफड़े का रोग	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
दमा	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
पुराना गुर्दा रोग	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
पुराना यकृत रोग	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
पुराना तंत्रिका संबंधी विकार	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
मधुमेह	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
वर्तमान धूम्रपान ♦ हा ♦ नहीं ♦ अज्ञात उल्लिखित करें:	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
क्षय	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
एचआईवी	<input type="checkbox"/> हाँ -onART <input type="checkbox"/> हाँ -notonART <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
कर्कट रोग	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
अन्य <input type="checkbox"/> हा <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात यदि हाँ तो उल्लिखित करें	
औषधि-प्रयोग वृत्तान्त	
एंजियोटेंसिन एंजाइम अवरोधकों का परिवर्तन (एसीई अवरोधक)?	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
एंजियोटेंसिन। रिसेप्टर ब्लॉकर्स (एआरबी)?	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> नहीं <input type="checkbox"/> अज्ञात
नॉन-स्टेरॉयडल एंटी-इन्फ्लेमेटरी (एनएसएआईडी)?	<input type="checkbox"/> हाँ <input type="checkbox"/> No <input type="checkbox"/> अज्ञात

अन्य (यदि कोई हो तो कृपया उल्लेखित करें)

***पंजीकृत आयुर्वेद चिकित्सकों के उपयोग हेतु**

आयुर्वेद परीक्षण

संप्राप्ति

	वात	पित्त	कफ
अनुबन्ध दोष	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
अनुबन्ध दोष	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
आवरक दोष	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
क्षीण दोष	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

क्षीण धातु

- रस
- रक्त
- मांस
- मेद
- अस्थि
- मज्जा
- शुक्र

दुष्य (शामिल)

- रस
- रक्त
- मांस
- मेद
- अस्थि
- मज्जा
- शुक्र

रोग की अवस्थाएँ (रोग क्रिया काल):

- संचय
- प्रकोप
- प्रसर
- स्थान संश्रय
- व्यक्ति

- भेद □

अष्टविधि परीक्षा :

नाड़ी :

मूत्र :

मल :

जिह्वा:

शब्द :

स्पर्श :

दृक :

आकृति :

दशविधि परीक्षा :

प्रकृति :

विकृति :

सत्व :प्रवर/अवर/मध्यम

सार :त्वक/रक्त/मांस/मेद/अस्थि/मज्जा/शुक्र

संहनन :सम्यक/ मध्यम /हीन प्रमाण:सुप्रमाणिता/अधिक/हीन

सात्म्य : आहार शक्ति :अभ्यवरण _____:जरण _____

व्यायाम शक्ति :वय:

स्रोतों की परीक्षा

प्राणवह परीक्षा

अल्प अल्प श्वास (श्वास में कमी)

अतिश्रम श्वास (श्वसन दर में वृद्धि)

अभीक्षण श्वास

कुपित श्वास (सांस लेने में परेशानी)

सशूल श्वास (दर्द के साथ श्वास कष्ट)

रसवह स्रोत परीक्षा

मुख वैरस्य (मुंह में बुरा स्वाद), क्लैब्य (लिबिडो की हानि)

हल्लास (वाटर ब्राश) अग्निमांघ (भूख में कमी)

अरसंज्ञता (स्वादहीनता)

गौरव (भारीपन महसूस करना)

तंद्रा (स्तूपर)

अंग मर्द (वदन दर्द)

ज्वर (बुखार)

पांडु (एनीमिया)

अवसाद (डिप्रेशन)

क्षय (क्षीणता)

अस्थायी निदान :

अंतिम निदान

सारांश : _____

कोविड 19 मामले का आयुर्वेदिक उपचार

चिकित्सा	चिकित्सा का विवरण	खुराक	अनुपान	उपचार अवधि

मूल्यांकन

क. नैदानिक लक्षण

उपचार से पूर्व (0-5स्केल)

उपचार के बाद (0-5 स्केल)

1. बुखार
2. गले में खराश
3. खांसी
4. दमा (सांस में कमी)
5. जुकाम/नासास्राव
6. सामान्य कमजोरी
7. सिर दर्द
8. चिड़चिड़ापन/भ्रम की स्थिति
9. जी मिचलाना/वमन
10. अतिसार
11. अन्य (_____)

क. वायरल स्वच्छता समय [यदि मामला सकारात्मक है]: _____ दिन

(सार्स-कोविड-19 आरएनए का पता लगाने के लिए आरटी-पीसीआर का उपयोग करके वायरल उपस्थिति निर्धारित की जाएगी। अस्पताल में जब तक कम से कम 2 लगातार नकारात्मक परिणाम न आ जाए तब तक वायरल आरएनए के लिए गले के स्वाब्स रोजाना लिए जाएंगे। रोगी के लगातार ≥ 2 नकारात्मक पीसीआर परीक्षणों के बाद वायरस को ठीक होने के रूप में परिभाषित किया जाएगा। वायरल क्लियरेंस का समय नकारात्मक गला स्वाब्स के पहले रेंडोमाइजेशन के बाद के समय के रूप में परिभाषित किया जाएगा)

अन्य

- मेकेनिकल वेंटिलेशन से मुक्त दिनों की संख्या: _____ दिन
- मेकेनिकल वेंटिलेशन की अवधि: _____ दिन
- अस्पताल में भर्ती होने की अवधि/अस्पताल में बचे रहने की अवधि: _____ दिन
- अन्य गौण संक्रमण/ अन्य गौण संक्रमणों की उपस्थिति:

प्रतिकूल घटनाएँ यदि कोई हो:

	1	2	3	4
प्रतिकूल अनुभव				
शुरू होने की तिथि समय: समाप्त करने की तिथि				
स्वरूप पृथक/ सविराम/ अविरल				
गंभीरता सौम्य/मध्यम/गंभीर				
अध्ययन का संबंध				

औषधि-प्रयोग				
असंबंधित-1;संभव				
-2;संभावित-3				

चिकित्सक के संक्षिप्त हस्ताक्षर

सहमति प्रपत्र

अस्पताल/मेडिकल कॉलेज/क्लिनिक का नाम: _____

वैद्य/चिकित्सक का नाम: _____

योग्यता : _____

पता : _____

फोन : _____

ई-मेल : _____

रोगी की जानकारी :

नाम : श्री/श्रीमती/सुश्री _____

आयु : _____ वर्ष

पता : _____

मैं, अधोहस्ताक्षरी, एतद द्वारा उल्लेख करता हूँ और निम्नानुसार पुष्टि करता हूँ:

1. मुझे उन शब्दों और भाषा के बारे में बताया गया है जिन्हें मैं समझता हूँ। मुझे निम्नलिखित(भाषा या बोली का नाम) जो मेरे द्वारा बोली और समझी जाती है, उसी भाषा में समझाया गया है।
2. मुझे समझाया गया है; मुझे अपेक्षित जानकारी प्रदान की गई है; मैंने समझ लिया है; और इसके बाद, मैं उक्त नाम के वैद्य/चिकित्सक तथा उनकी टीम के लिए उनकी पसंद के सहभागियों अथवा सहयोगियों के साथ उनके द्वारा प्रस्तावित उपर्युक्त उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी के लिए अधिकृत और निर्देशित करने की सहमति देता/देती हूँ।
3. मुझे समझाया गया है और मैंने समझ लिया है कि प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी के दौरान अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण मूल रूप से बनाई गई योजना से कुछ अधिक अथवा भिन्न और जिसके लिए मैं यह सहमति दे

रहा हूं उसे प्रदर्शित करने का प्रयास करना पड़ेगा। ऐसी सभी घटनाओं में मैं मेडिकल/सर्जिकल टीम को इस तरह के अन्य और आगामी कार्यों के लिए अधिकृत करता हूं और अपनी सहमति देता हूं कि वे अपने वृत्तिक विवेक का उपयोग करके योग्य व यथोचित निर्णय करें।

4. मुझे समझाया गया है और मैंने प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी की वैकल्पिक विधियों एवं चिकित्साविधानों के संबंधित लाभों, सामग्री जोखिमों और नुकसानों को समझ लिया है।
5. मुझे समझाया गया है और मैंने समझ लिया है कि प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/ सर्जरी में कुछ सामग्री जोखिम/जटिलताएं हैं एवं मुझे इसके बारे में अपेक्षित जानकारी प्रदान की गई है। मुझे यह भी समझाया गया है और मैंने समझ लिया है कि प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/ प्रक्रिया/सर्जरी के दौरान अथवा इसके बाद अन्य अपरिभाषित, अप्रत्याशित, अस्पष्टीकृत जोखिम/जटिलताएं हो सकती हैं।
6. मैं उल्लेख करता हूं कि वैद्य/चिकित्सक ने प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी के बारे में मेरी संतुष्टि के लिए मेरे सभी सवालों के जवाब दिए हैं।
7. मुझे समझाया गया है और मैंने समझ लिया है कि सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी के परिणाम के बारे में कोई आश्वासन नहीं हो सकता है। मैं आगे उल्लेख करता हूं और पुष्टि करता हूं कि प्रस्तावित उपचार/चिकित्सा/प्रक्रिया/सर्जरी के परिणामों के बारे में मुझे कोई गारंटी या वारंटी नहीं दी गई है।
8. मुझे समझाया गया है और मैंने समझ लिया है कि सभी सावधानियों के बावजूद जटिलताएं हो सकती हैं, जिनके परिणामस्वरूप मृत्यु या गंभीर विकलांगता भी हो सकती है।
9. मुझे प्रस्तावित उपचार/प्रक्रिया/सर्जरी के बारे में किसी अन्य चिकित्सक से दूसरी राय लेने के विकल्प की सलाह दी गई है।
10. मैं उल्लेख करता हूं कि समझाने, परामर्श देने और खुलासा करने के बाद मुझे सहमति देने के लिए निर्णय लेने हेतु पर्याप्त समय दिया गया था।
11. मैंने अपनी स्वतंत्र इच्छा से और किसी भी तरह की ज़ोर जबरदस्ती के बिना इस सहमति पर स्वेच्छा से हस्ताक्षर किए हैं।

सहमति देने की तिथि और समय :

रोगी/अभिभावक के हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान:

रोगी/अभिभावक का नाम :

गवाह:

(अनिवार्य नहीं। यह भाग केवल उच्च जोखिम वाले मामलों में भरा जाना चाहिए; अथवा जब रोगी/ रोगी का अभिभावक अनपढ़ हो अथवा अंग्रेजी में बातचीत न करता हो; अथवा जब रोगी किसी भी कारण से व्यक्तिगत रूप से इस सहमति पर हस्ताक्षर करने में असमर्थ रहा हो।)

हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि हमारी उपस्थिति में रोगी/रोगी के अभिभावक को पूर्वोक्त शर्तों और भाषा को उनकी समझने योग्य भाषा में समझाया गया है। हम आगे पुष्टि करते हैं कि रोगी/ रोगी के अभिभावक ने हमारी उपस्थिति में इस सहमति पर अपने हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान लगा दिया है।

गवाह सं. 1 के हस्ताक्षर:

गवाह सं. 1 का नाम:

गवाह सं. 2 के हस्ताक्षर:

गवाह सं. 2 का नाम:

चिकित्सक-प्रभारी/प्रमुख सर्जन/प्रमुख चिकित्सक के हस्ताक्षर:

समय एवं तापमान का _____ महीने का चार्ट

दिन	दिन हर घंटे का तापमान															
	7:00	8:00	9:00	10:00	11:00	12:00	1:00	2:00	3:00	4:00	5:00	6:00	7:00	8:00	9:00	10:00
1.																
2.																
3.																
4.																
5.																
6.																
7.																
8.																
9.																
10.																
11.																
12.																
13.																
14.																
15.																
16.																
17.																
18.																
19.																
20.																
21.																
22.																
23.																
24.																
25.																
26.																
27.																
28.																
29.																

30.																	
31.																	

संलग्नक II

यौगिक योगों के शास्त्रीय संदर्भ

नोट : विस्तृत उपयोग और मात्रा के लिए, कृपया संबंधित अध्यायों और खंडों के अंतर्गत मुख्य दस्तावेज देखें

क्र. सं.	औषधि का नाम	संदर्भ
1.	अभ्रक भस्म	आयुर्वेद प्रकाश 2/97-98
2.	अगस्त्य हरीतकी	अष्टांग हृदय, चिकित्सास्थान, 3/125-130
3.	अगस्त्य हरीतकी रसायन	अष्टांग हृदय, चिकित्सास्थान, 3/125-130
4.	अमृतारिष्ट	भैषज्य रत्नावली, ज्वराधिकर ,690-693
5.	अमृतोत्तरं कषाय	सहस्र योग, कषाय प्रकरणम,. पृ. 4
6.	अर्जुनारिष्ट	भैषज्य रत्नावली, हृद्रोगाधिकर , 73-75
7.	अर्क यावनी	अर्कप्रकाश, शतक, 3:7
8.	अश्वगंधारिष्ट	भैषज्य रत्नावली, मूर्च्छाधिकर, 13-19
9.	बलारिष्ट	भैषज्य रत्नावली, वातव्याधि अधिकर , 569-572
10.	भाईग्यादि कषायम	सहस्र योग, कषाय प्रकरण, 36
11.	भाईग्यादि क्वाथ	सहस्र योग, कषाय प्रकरण, 36
12.	बिल्वादि वटी	अष्टांग हृदयम, उत्तरस्थान, 36/84-85
13.	ब्रह्म रसायन	अष्टांग हृदयम, उत्तरस्थान, 39/15-23
14.	चंद्रामृत रस	रसामृत, रसयोगविज्ञान, 9/64-67

15.	चंद्रप्रभा वटी	शार्ङ्गधर संहिता मध्यम खंड, 7/40-49
16.	चतुर्थक ज्वरहर काथ	
17.	च्यवनप्राश अवलेह	चरक संहिता, चिकित्सास्थान, 1(1), 62-74
18.	चित्रक हरीतकी अवलेह	भैषज्य रत्नावली, नासा रोगाधिकर, 31-33
19.	चित्रक हरितकी रसायन	भैषज्य रत्नावली, नासा रोगाधिकर, 31-33
20.	दशमूल कटुत्रयादि कषाय	सहस्र योग, कषाय प्रकरण, 107
21.	दशमूल काथ	भैषज्य रत्नावली, कास रोगाधिकर, 380-384
22.	देवदार्यादि काथ	भैषज्य रत्नावली, स्त्रीरोगाधिकर, 380-384
23.	धान्वंतर गुटिका	सहस्र योग, गुटिका प्रकरण 56
24.	गोदन्ती भस्म	रसतरंगिणी 11/238
25.	गोरोचनादि वटी	वैद्य योग रत्नावली, गुटिका प्रकरण, 77
26.	गुडुच्यादि कषायम	सहस्र योग, कषाय प्रकरण, 38
27.	हरिद्राखंड	भैषज्य रत्नावली, शीतपित्त उदरद कोठाधिकर, 12-16
28.	हृदयार्णव रस	रसेन्द्र सार संग्रह, हृद्रोगचिकित्सा, 1-3
29.	कंटकारी अवलेह	शार्ङ्गधर संहिता मध्यम खंड, 8/5-9
30.	खदिरादि वटी	योगरत्नाकर, कायचिकित्सा, पृ. 353-354
31.	कूष्माण्ड रसायन	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, 8/22-28
32.	लवंगादि वटी	वैद्यक जीवम, कास श्वास चिकित्सा, 7
33.	लक्ष्मीविलास रस	भैषज्य रत्नावली, रसायनाधिकर, 55-68
34.	महा सुदर्शन घन वटी (महासुदर्शन चूर्ण के शुष्क जलीय अर्क)	शार्ङ्गधर संहिता मध्यम खंड, 6/26-36
35.	मल्लसिंदुर	सिद्ध भेषज मणिमाला 5/37

36.	मृत्युंजय रस	भैषज्य रत्नावली, ज्वराधिकर, 409 – 418
37.	नवजीवन रस	आयुर्वेद सार संग्रह, रस रासयान प्रकरण, अध्याय 5, पृ. 382
38.	पथ्यादि कषायम	शार्ङ्गधर संहिता मध्यम खंड, 2/143-145
39.	प्रभाकर वटी	भैषज्य रत्नावली, हृदरोगाधिकर, 67
40.	पुष्करमूलासव	गदनिग्रह आसवाधिकर, 6
41.	रासानासप्तक काथ	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, 2/86-87
42.	सैधवादि तैल	भैषज्य रत्नावली नाडीव्रणाधिकर, 31
43.	समीरपन्नग रस	आयुर्वेद औषधिगुण धर्म शास्त्र, भाग IV, पृ. 88
44.	संशमनी वटी	सिद्धयोग संग्रह, ज्वराधिकर, पृ. 183
45.	संजीवनी वटी	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, 7/134-137
46.	सारस्वतारिष्ट	भैषज्य रत्नावली, रसायनाधिकर, 178-191
47.	सर्पगंधा घन वटी	सिद्धयोग संग्रह, भ्रम-अनिद्रा-उन्मादरोगाधिकर
48.	षडंग पानीय	चरक संहिता, चिकित्सा स्थान
49.	शिलाजित्वादि लौह	भैषज्य रत्नावली, राजयक्ष्माधिकर: 166
50.	शृंग भस्म	रस तरंगिणी 12/104
51.	श्वास कुठार रस	योग रत्नाकर, श्वास चिकित्सा, पृ. 373
52.	सितोपलादि चूर्ण	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, 6/134-137
53.	सोमासव	
54.	स्वर्णमालिनी वसंत रस	सिद्ध भेषज मणिमाला, ज्वरप्रकरण, 60-62
55.	तालीसादी चूर्ण	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, 6/130-133
56.	टंकण भस्म	रसतरंगिणी 13/79-81
57.	त्रिभुवन कीर्ति रस	योग रत्नाकर, ज्वर चिकित्सा, पृ. 241

58.	तृणपञ्चमूल क्वाथ	भैषज्य रत्नावली, मूत्ररोगाधिकर
59.	वरुणादि क्वाथ	चक्रदत्त, अश्मरी चिकित्सा, 29
60.	वासकासव	गदनिग्रह, प्रयोग खंड, आसवाधिकर, 152-154
61.	वसंत कुसुमाकर रस	रसेन्द्र सार संग्रह, रसायन वाजीकरणाधिकर, 80-85
62.	वेट्टुमारण गुलिका	सहस्र योग, ज्वराधिकर, 147
63.	विषमज्वरांतक लौह	रसेन्द्र सार संग्रह, ज्वराधिकर, 271-277
64.	व्याघ्री हरितकी	भैषज्य रत्नावली, कासरोगाधिकर, 43-46
65.	व्योषादि वटी	शार्ङ्गधर संहिता, मध्यम खंड, उत्तरस्थान , 7/22-23

ग्रंथ सूची

संदर्भित लेख / दिशानिर्देश

1. कोविड-19 बीमारी का संदेह होने पर गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण (एसएआरआई) का नैदानिक उपचार: अंतरिम दिशानिर्देश (संस्करण 1.2), 13 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्ल्यूएचओ / 2019-nCoV / नैदानिक/2020.4) द्वारा जारी किया गया।
2. उपाध्याय ए. के., कुमार के., कुमार ए., मिश्रा एचएस. द्वारा टिनोस्पोराकोर्डिफ़ोलिया (विल्ड) हुक. एफ़. और थोम्स. (गुडूची) - प्रायोगिक और नैदानिक अध्ययन के माध्यम से आयुर्वेदिक औषध विज्ञान का विधिमान्यकरण किया गया। Int J Ayurveda Res. 2010;1(2):112-121. doi:10.4103/0974-7788.64405
3. इब्राहिम जंतन एम, हक ए, इलंगकोवन एम, अरशद एल. द्वारा इम्यून सिस्टम पर फिलेन्थस प्रजाति और उनके बायोएक्टिव मेटाबोलाइट्स के कार्य के मॉड्यूलेटरी प्रभाव और मेकेनिज़्म में एक अंतर्दृष्टि नामक लेख तैयार किया। फार्माकोलॉजी में फ्रंटियर्स 2019; 10
4. ज़ोरोफ़चियानमोघडैमतौसी एस, अब्दुल कादिर एच, हासनदरविश पी, ताजिक एच, अबूबकर एस, जंडी द्वारा जीवाणुरोधी, एंटीवायरल और करक्यूमिन की एंटीफंगल गतिविधि पर एक समीक्षा की गई। अनतर्राष्ट्रीय बायोमेड अनुसंधान 2014;2014
5. घोके एसएस, सूद आर, कुमार एन द्वारा एट अल. एच 9 एन 2 वायरस भ्रूण के चिकन अंडे के मॉडल के उपयोग के विरुद्ध ओसिमम सेंक्टम और अकेसिया अरेबिका पत्रों के अर्क की एंटीवायरल गतिविधि का मूल्यांकन किया। बीएमसी कोम्लीमेंट अल्टर्न मेड. 2018;18 (1) 174. 5 जून 2018 को प्रकाशित doi:10.1186/s12906-018-2238-1
6. शर्मा आर, मार्टिन्स एन, कूका के, चौधरी ए, काबरा ए, राव एमएम, प्रजापति पीके द्वारा "च्वनप्राश: एक पारंपरिक भारतीय बायोएक्टिव स्वास्थ्य पूरक" का अध्ययन किया गया। बायोमोलिक्युल्स। 2019 मई; 9(5):161
7. "आयुर्वेद एवं....- सीसीआरएस के माध्यम से चिकुनगुनिया का उपचार।" 22 सितंबर 2016, http://www.ccras.nic.in/sites/default/files/22092016_MANAGEMENT%20OF%20CHIKUNGUNYA%20THROUGH%20AYURVEDA%20AND%20SIDHA

[-A%20TECHNICAL%20REPORT.pdf](#). पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।

8. "औषधीय अनुसंधान की वैश्विक पत्रिका – डबल्यूजेपीआर" 21 नवम्बर 2017, https://wjpr.net/admin/assets/article_issue/1513597567.pdf. पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।
9. "..... - एजेपीआर द्वारा तैयार की गई अमृतारिष्ट की रोगानुरोधी गतिविधि" <https://asianjpr.com/HTMLPaper.aspx?Journal=Asian%20Journal%20of%20Pharmaceutical%20Research;PID=2014-4-2-8>. पर 5 अप्रैल 2020 को एक्सेस की गई।
10. पेंचला गोली प्रसाद एंड नागलक्ष्मी, वी एंड बाबू, गज्जी एंड स्वामी, गीता द्वारा (2008) में परिणामशूल (डुओडेनल अल्सर) में वर्धमान इंदुकांत घृत का प्रभाव का अध्ययन किया गया। आयुर्वेद एवं सिद्ध में शोध पत्रिका XXIX,. 15-28
11. मसराम, प्रवीण एंड चौधरी, सुहास एंड पटेल, केएस एंड कोरी, वीके एंड राजगोपाल एस. द्वारा (2014) में प्रतिरोधकता और प्रतिरक्षीकरण की आयुर्वेदिक अवधारणा पर एक संक्षिप्त समीक्षा सम्पन्न की गई | AyurpharmInt J AyurAlliSci.. 3. 230-240.
12. गुप्ता, ए. एंड प्रजापति, पी. के. द्वारा (2011) में तमक श्वास (ब्रोन्कियल अस्थमा) के उपचार में विभिन्न अवलेह का प्रभाव का अध्ययन किया गया। Ayu, 32(3), 427–431. <https://doi.org/10.4103/0974-8520.93928>
13. जियाउद्दीन एम, फनसालकर एन, पटकी पी, दिवान्य एस, पटवर्धन बी. द्वारा अश्वगंधा के इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभावों पर अध्ययन किया गया। J Ethnopharmacol. 1996;50(2):69–76. doi:10.1016/0378-8741(95)01318-0
14. पाटिल, यू., एंड 24 और 25 मई 2013 (2013) को अंतर्दृष्टि आयुर्वेद 2013, कोयंबतूर की कार्यवाही से बहु औषधि प्रतिरोधी बैक्टीरिया के नैदानिक आइसोलेट्स के विरुद्ध विदंग की क्रिमिग्र क्रिया, सही पहचान का महत्व। जीवन का प्राचीन विज्ञान, 32(Suppl 2), S20. <https://doi.org/10.4103/0257-7941.123834>
15. पूजा, बी. ए. एंड भट्टेड एस. (2015) प्रवाहिका का आयुर्वेदिक उपचार – एक मामले का

- प्रतिवेदन। Ayu, 36(4), 410–412. <https://doi.org/10.4103/0974-8520.190701>
16. तिलक चंद केआर, मथाई आरटी, सिमोन पी. रवि आरटी, बालिगा- राव एमपी, बालिगा एमएस द्वारा भारतीय आंवला (एम्बलिका ओफिसिनलिस गेयर्टन) के हेपेटोप्रोटेक्टिव गुण: एक समीक्षा सम्पन्न की गई | Food Funct. 2013;4(10):1431–1441. doi:10.1039/c3fo60237k
 17. केविन सी. विल्सन, संजय एच. चोतिरमल, चिनक्सू बाई, और जोर्डी रीलो, द्वारा इंटरनेशनल टास्क फोर्स की ओर से कोविड 19, अमेरिकन थैरेसिक सोसाइटी की वेबसाइट पर एक ओपन एक्सेस डॉक्यूमेंट है।
 18. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, ईएमआर डिवीजन द्वारा प्रकाशित कोविड -19 के संदिग्ध/कन्फ़र्म किए गए मामलों के उचित उपचार पर मार्गदर्शन दस्तावेज 9 अप्रैल 2020 से <https://www.mohfw.gov.in/> पर उपलब्ध है।
 19. लिबर्टीमावेनस्टॉक, कोविड-19 ने हम सभी को मूर्ख बना दिया, लेकिन अब हमने अंततः 9 अप्रैल 2020 को इसके रहस्य का आकलन कर लिया और यह <http://web.archive.org/web/20200405061401/https://medium.com/@agaiziu/nas/covid-19-had-us-all-fooled-but-now-we-might-have-finally-found-its-secret-91182386efcb> पर उपलब्ध है।
 20. धवन, बी.एन. द्वारा भारतीय पौधों की एंटी-वायरल गतिविधि Proc. Natl. Acad. Sci. Sect B. Biol. Sci. 82, 209–224 (2012). <https://doi.org/10.1007/s40011-011-0016-7>
 21. आयुष विभाग (औषध नियंत्रण प्रकोष्ठ) द्वारा प्रकाशित आवश्यक औषधि सूची (ईडीएल), मार्च 2013 ayush.gov.in पर उपलब्ध है जिसका 9 अप्रैल 2020 को मूल्यांकन किया गया।
 22. संदीप रामलिंगम, कैटरियोना ग्राहम, जेनी डोव, लिन मॉरिस, अजीज शेख द्वारा 9 अप्रैल 2020 को हाइपरटोनिक लावनीय नाक सिंचाई और गरारे का मूल्यांकन किया गया जिसे कोविड-19 के लिए एक उपचार विकल्प के रूप में माना जाना चाहिए यह <http://jogh.org/documents/issue202001/jogh-10-010332.pdf> पर उपलब्ध है।
 23. किर्क-बेले, जस्टिन और चैलकोम्बे, स्टीफन और सनकर्नेनी, विष्णु और कॉम्ब, जेम्स द्वारा वर्तमान कोविड-19 महामारी के दौरान पोवाइडोन आयोडीन नाक स्प्रे और माउथवॉश का उपयोग

हेल्थकेयर वर्कर्स को सुरक्षित रख सकता है और क्रॉस संक्रमण को कम कर सकता है। (28 मार्च, 2020) SSRN: <https://ssrn.com/abstract=3563092> अथवा <http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.3563092> पर उपलब्ध है।

डिस्क्लेमर

ये दिशानिर्देश स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के मानक उपचार दिशानिर्देशों के अलावा आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अंतःअनुशासनात्मक आयुष अनुसंधान और विकास कार्य बल व्यवस्था द्वारा भी निरीक्षित हैं।